डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 102 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | सोमवार 22 जनवरी 2024 | मूल्य 2 रुपया

कार में मिला रेलवे इंजीनियर का शव

गोली मारकर की गई हत्या, रतलाम में थे पदस्थ, प्रेम प्रसंग को लेकर वारदात की आशंका

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। रेलवे डिवीजन हेडक्वार्टर रतलाम में तैनात जूनियर इंजीनियर का शव रविवार दोपहर मंदसौर जिले में मिला है। प्रेम प्रसंग में गोली मारकर हत्या की आशंका है। मामला मंदसौर के भावगढ़ थाना क्षेत्र के खोड़ाना गांव का है। शव तालाब किनारे खड़ी कार में पाया गया। दिक्षांत पंड्या रतलाम रेल मंडल मुख्यालय पर सीएंडडब्ल्यू (कारगो एंड वैगन) डिपार्टमेंट में कार्यरत थे। वेस्टर्न रेलवे इंप्लॉइज यूनियन की युवा समिति के उपाध्यक्ष भी थे। घटना रतलाम और मंदसौर बॉर्डर पर होने के कारण रतलाम के ढोढर थाने से भी पुलिस मौके पर पहुंची। भावगढ़ (मंदसौर) थाने के सब इंस्पेक्टर जोरसिंह डामोर ने बताया कि शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। परिजन को सूचना दे दी गई है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक दिक्षांत के शव पर चार गोलियों के निशान थे। एक गोली शरीर के पार कर निकल गई। तीन और गोलियां भी लगी हैं। घटनास्थल पर खड़ी मिली ब्रेजा कार एमपी 43 सीबी 0143 जेई की ही बताई जा रही है। हत्या के पीछे प्रेम प्रसंग की बात सामने आ रही है। मोहसीन नाम का युवक और जेई की एक ही युवती से दोस्ती थी। पुलिस मोहसीन को तलाश रही है।

आज मनेगी श्री राम दिवाली

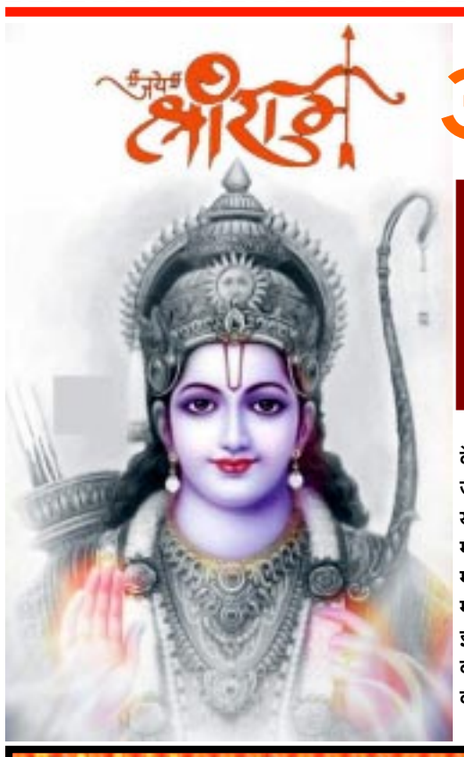

आजादी के बाद पहली बार पटाखा लाइसेंस, मिट्टी के दीपक की भी बंपर डिमांड, बाजारों में आकर्षक सजावट

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। 2024 में दीपावली के पहले आज 22 जनवरी को दिवाली का त्यौहार मनाया जाएगा। वर्ष 2023 की दीपावली के बाद अब 74 दिन बाद यानी आज 22 जनवरी 2024 को एक बार फिर दिवाली मनाई जाएगी। इसके लिए पूरे शहर को सजाया गया है। सभी मंदिरो सहित सार्वजनिक स्थानो को सजाया गया है। राम मंदिर ट्रस्ट ने लोगों से राम दिवाली मनाने की अपील की है। इसके लिए दियों, केसरिया ध्वज, तोरण और पटाखों का बाजार सज गया है। फूल, इलेक्ट्रॉनिक्स और लाइटिंग कारोबारियों में भी उत्साह है।

कारोबारियों का कहना है कि ये पहला मौका है, जब बिना दशहरा-दीपावली के ही एडवांस ऑर्डर आए हैं। जिलों में प्रशासन ने पटाखा दुकानों के लिए अस्थाई लाइसेंस दिए हैं। जानकारों की मानें तो आजादी के बाद ये पहला मौका है, जब दिवाली के इतर किसी दूसरे मौके पर पटाखों की दुकानों को अस्थाई लाइसेंस दिए गए हैं। रतलाम जिले के जावरा एसडीएम अनिल भाना ने तो एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा कि 22 जनवरी को ऐसा उत्साह होना चाहिए कि दिवाली फिकी पड़ जाए। इसलिए हमने 250 दुकानों को लाइसेंस दिए हैं।

दीपावली जैसे कारोबार की उम्मीद...

व्यापारियों के अनुसार दिवाली जैसा क्रेज नजर आ रहा है। हमारे जो नियमित ग्राहक हैं, वे फोन कर अपने ऑर्डर बुक करा रहे हैं। फुटकर बाजारों के व्यापारी भी बड़ी संख्या में पटाखा ले गए है। रोशनी वाले पटाखों का विशेष स्टॉक बुलाया गया है। दीपावली की तरह ही बिक्री पटाखों की हुई है। अभी 50, 100, 200 शॉट्स वाले पटाखों की भी खूब डिमांड है। वहीं, कारोबारी मनोज केसवानी का कहना है कि छोटे दुकानदार चार दिन पहले से ही थोक बाजार से माल उठा रहे हैं। वे कहते हैं कि दिवाली को छोड़कर आम दिनों में पूरे मार्केट में हजारों की बिक्री भी नहीं हो पाती। इस बार ऐसा नहीं है।

गांवों में भी पटाखों की डिमांड...

22 जनवरी पर भव्य आतिशबाजी करने के लिए कई परिवार आसपास के गांवों से थोक बाजार.... **शेष पेज 3 पर**

श्री राम जन्मस्थली अयोध्या में 30 अक्टूबर 1990 को कारसेवकों द्वारा की गई कार्रवाई की ऑखों देखी खबर (पेज 4 पर पढ़े...)

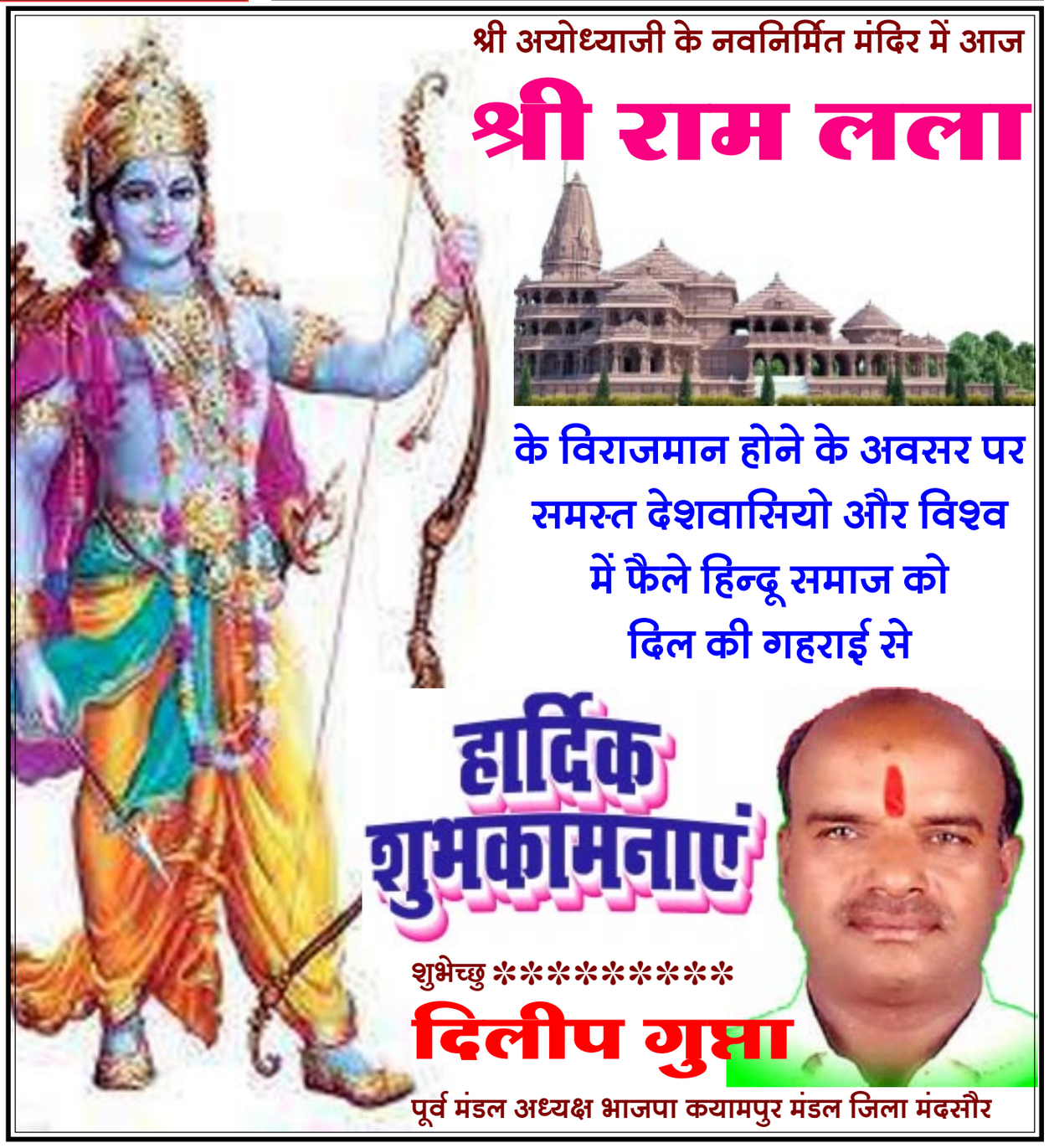

विचार-मंथन

नाव हादसा : लोग सबक लेने को तैयार नहीं

किसी भी हादसे का सबक यह होना चाहिए कि उस तरह के हालात और कारणों से बचने के हर उपाय किए जाएं, ताकि वैसा दुबारा न हो। मगर ऐसा लगता है कि नदियों में यात्रियों सहित नाव डूबने की बार-बार घटनाओं और उसके कारणों के साफ होने के बावजूद लोग उससे सबक लेने को तैयार नहीं हैं। गुजरात के वडोदरा में एक झील में नाव पलट जाने से बारह बच्चों और दो शिक्षकों की डूबने से मौत की घटना ने एक बार फिर यही दर्शाया है कि लापरवाही कायम है और निर्दोष लोगों की जान जा रही है।

वडोदरा के हरणी झील में एक स्कूल के छात्र अपने कुछ शिक्षकों के साथ पिकनिक मनाने गए थे। जाहिर है, यह सैर-सपाटा और अच्छा वक्त बिताने के लिए आपस में खुशी बांटने का मौका था। मगर इस क्रम में कई स्तर पर जितनी बड़ी लापरवाही बरती गई, उसमें खुशी मनाने का वह मौका एक मातम में बदल गया। गहरे पानी में नाव का संतुलन बिगड़ा और वह पलट गई, जिसमें बारह विद्यार्थी और दो शिक्षक डूब गए। जबकि किसी तरह अठारह छात्रों और दो शिक्षकों को बचा लिया गया।

सवाल है कि जिस नाव की कुल क्षमता महज सोलह लोगों की थी, उस पर करीब दोगुनी संख्या में लोगों को बिठा कर गहरे पानी में ले जाने की छूट किस आधार पर मिली हुई थी और इसकी अनदेखी कर ऐसा करने की इजाजत किसने दी थी! जबकि अगर नियम-कायदे के मुताबिक नाव झील में जा रही हो, तब भी हादसे का जोखिम लगातार बना रहता है।

अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि नाव में सवार कुल दस बच्चों को ही जीवनरक्षक जैकेट पहनाए गए थे। यह किस आधार पर मान लिया गया कि बाकी को इसकी जरूरत नहीं थी? ऐसी घटनाओं के बाद रस्मअदायगी में उच्चस्तरीय जांच और कार्रवाई आदि की घोषणा की जाती है, वह वडोदरा में हुए हादसे के बाद भी हुई।

नाव संचालन से जुड़े एक प्रबंधक सहित तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया और कुल अठारह लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई। मगर अफसोस कि चौदह लोगों की जान जाने के बाद प्रशासन की ओर से दर्शाई जा रही इस सक्रियता का आधा हिस्सा भी अगर अमल में रहता तो यह हादसा ही न होता।

इस तरह का यह कोई पहला हादसा नहीं है। विडंबना है कि किसी भी स्तर पर जोखिम का ध्यान रखना और उसी मुताबिक बचाव के इंतजाम करने को कोई दोयम दर्जे का काम माना जाता है। खबरों के मुताबिक, वडोदरा की झील में हुए हादसे के वक्त स्थानीय लोगों ने कई बच्चों को बचाया। नावों के संचालन को इजाजत देने वाले संबंधित महकमे और उसके अधिकारियों को यह सुनिश्चित कराना जरूरी क्यों नहीं लगा कि नाव पर सवार हर व्यक्ति को जीवनरक्षक जैकेट पहनाया जाए और हर हाल में नाव के साथ-साथ आसपास पर्याप्त संख्या में गोताखोर, बचावकर्मी मौजूद हों, जो आपात स्थिति में लोगों की जान बचा सकें।

दरअसल, नाव के डूबने के जो भी कारण सामने आए हैं, उससे साफ है कि यह आपराधिक लापरवाही का मामला है। इसमें न केवल नाव के संचालन से जुड़े लोग, बल्कि उसमें सवार होने वाली संख्या, सुरक्षा उपकरणों के अभाव, बचावकर्मियों की गैरमौजूदगी और जोखिम की आशंका जैसी स्थितियों को जानबूझ कर अनदेखी करने वाले वे अधिकारी और कर्मचारी भी जिम्मेदार हैं, जिनका दायित्व होता है कि नियमों पर सौ फीसद अमल सुनिश्चित हो।

राम मंदिर निर्माण हेतु योगदान में राजस्थान सबसे आगे

निरंजन परिहार

अयोध्या राजस्थान से बहुत दूर है। प्रदेश की राजधानी जयपुर से कुल 708 किलोमीटर और गूगल मैप के अनुसार कार से 12 घंटे 36 मिनट दूर। लेकिन अयोध्या में बन रहे भगवान राम के मंदिर की वजह से राम, राजस्थान और अयोध्या का नाता बेहद नजदीक का हो गया है। राम मंदिर में लगे पत्थर राजस्थान से हैं, उन पत्थरों पर नक्काशी करने वाले कारीगर राजस्थान से हैं। खास बात यह है कि मंदिर उत्तर प्रदेश में बन रहा है, लेकिन सबसे ज्यादा आर्थिक योगदान राजस्थान से अयोध्या पहुंचा है, तो आरती का घी व प्रसाद बनाने के लिए तेल भी राजस्थान से अयोध्या पहुंचा है। राम मंदिर से जयपुर, जोधपुर, भरतपुर, सिरोही, आबूरोड, दौसा और मकराणा का नाता बड़ा गहरा हो गया है।

अयोध्या के राम मंदिर की भव्यता में जो निखार दिख रहा है, उसमें राजस्थान के पत्थरों और कारीगरों का खास योगदान है। भरतपुर, जोधपुर, जयपुर, मकराणा व भीलवाड़ा सहित सिरोही जिलों का पत्थर राम मंदिर को बनाने में लगा है, व लगातार लगता जा रहा है।

दुनिया भर में संगमरमर पत्थर के लिए मशहूर राजस्थान के मकराणा का संगमरमर यानी सफेद मार्बल का इस्तेमाल राम मंदिर के लिए किया गया है। मंदिर के भूतल पर हजारों वर्गफीट में मार्बल लगाया गया है, जो मकराणा से अयोध्या गया है। सिरोही जिले के सोमपुरा कारीगरों द्वारा मंदिर में लगने वाले पत्थरों को तराशा गया है। बरसों बरसों तक सिरोही जिले के पिंडवाड़ा के आस पास के गांवों में सैंकड़ों सोमपुरा कारीगर मंदिर के स्तंभ तराशते रहे। यहां के सोमपुरा कारीगरों की नक्काशी कला बेमिसाल है। लगातार 25 साल तक लोग पत्थरों पर नक्काशी करते रहे, और पहली बार उनकी मेहनत से तराशे गए पत्थरों को 2019 में अयोध्या भेजने का काम शुरू हुआ।

अयोध्या से रामेश्वरम तक भगवान श्रीराम के वन गमन मार्ग पर श्रीराम स्तंभ लगाने की भी योजना है। लगभग 2500 किलोमीटर लंबे इस वन गमन मार्ग पर श्रीराम स्तंभ लगाने के लिए कुल 290 स्थानों को चिन्हित किया गया है। श्रीराम स्तंभों का निर्माण भी राजस्थान के सिरोही जिले के आबूरोड में हो रहा है।

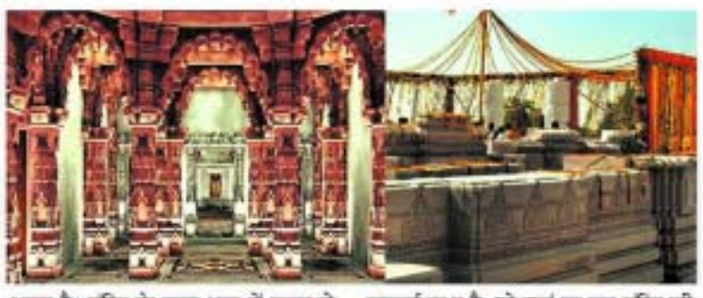

राम मंदिर के पास लगने वाला पहला श्रीराम स्तंभ अक्टूबर 2023 में ही आबूरोड से अयोध्या पहुंच गया है। जोधपुर के सूरसागर का छीत्तर पत्थर बहुत लोकप्रिय है, जोधपुर का भव्य महल उम्मेद भवन पैलेस भी उसी पत्थर से बना है। उन्हीं छीत्तर पत्थरों से राम मंदिर के सुंदर और विशाल 32 द्वार तैयार किए गए हैं। राजस्थान में दौसा जिले के सिकंदरा निवासी पत्थर पर नक्काशी करने वाले कारीगर साढ़े तीन साल से अयोध्या में काम कर रहे हैं। सिकंदरा में भी सिरोही जिले की तरह ही पिछले कई सालों से राम मंदिर निर्माण में लगने वाले झरोखों, तोरण द्वारों और स्तंभों पर नक्काशी का काम चल रहा था।

बंसी पहाड़पुर का नाम बहुत कम लोगों ने सुना होगा, लेकिन नागर शैली में बन रहे राम मंदिर के निर्माण में राजस्थान के कई इलाकों से पत्थर और अन्य सामग्री जा रही है, उसमें बंसी पहाड़पुर का पत्थर भी बेहद

अहम है। मंदिर के दृश्य भाग में सतह से ऊपर बादामी रंग के जिन बलुआ पत्थरों का उपयोग किया जा रहा है, वह राजस्थान के भरतपुर जिले के बयाना इलाके के बंसी पहाड़पुर की खदानों का है, जो अपने लुभावने रंग के कारण काफी आकर्षक है।

यहां से यह पत्थर पहले अवैध रूप से निकाला जा रहा था, लेकिन तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को खबर मिली, तो वे नाराज हुए और अधिकारियों से पूछा कि पवित्र कार्य के लिए गलत काम क्यों? तत्कालीन मुख्यमंत्री गहलोत ने 14 जून 2021 को अधिकारिक रूप से कहा कि प्रदेश के बंसी पहाड़पुर से अवैध खनन कर गुलाबी पत्थर राम मंदिर के लिए न भेजा जाए। गहलोत ने कहा कि हमने प्रयास करके यहां हो रहे पत्थर खनन के कार्य को भारत सरकार से लीगल तरीके से वैधता दिलवाई, जिसका हमें संतोष है।

रामलला के मंदिर में लगा हल्के लाल रंग का सेंड स्टोन राजस्थान से गया है। भीलवाड़ा जिले के बिजौलिया के पास उपरमाल की खानों का पत्थर राम मंदिर में लगा है। बिजौलिया की 3 कंपनियों से राम मंदिर को लगभग 5 लाख वर्ग फुट पत्थर सप्लाई हुआ है, जो वहां पर राम मंदिर की परिक्रमा, वॉक वे, पार्किंग एरिया और कुबेर टीले में लग रहा है।

बिजोलिया से अब तक 100 ट्रकों के माध्यम से 4 हजार टन से अधिक सैंड स्टोन राम मंदिर के लिए सप्लाई किया जा चुका है। प्राण प्रतिष्ठा के लिए भगवान राम की कुल तीन मूर्तियों का निर्माण हुआ, उनमें से एक का निर्माण जयपुर के मूर्तिकार सत्यनारायण पांडे ने किया है। उन्होंने सात महीनों में अयोध्या में रहकर इस मूर्ति को तैयार किया है। रामलला की वह मूर्ति मकराना के मार्बल पत्थर की है, जो 90 साल पहले खान से निकाला गया था और 40 साल से उनके पास पड़ा था। हालांकि वह मूर्ति गर्भगृह में नहीं स्थापित होगी लेकिन उसे भी मंदिर में ही स्थापित किया जाएगा। किसी भी बड़े काम में बड़ी और मजबूत आर्थिक स्थिति सबसे पहली जरूरत होती है। राजस्थान के धर्मप्रेमियों ने इस अवधारणा को समझते हुए राम मंदिर के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने में सबसे बड़ा योगदान दिया है। आंकड़े बताते हैं कि राजस्थान की जनता ने राम मंदिर के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने के मामले में उत्तर प्रदेश को भी पीछे छोड़ दिया है। राम मंदिर निधि समर्पण अभियान में राजस्थान से 500 करोड़ रुपए से भी ज्यादा का सहयोग रहा है। यह अभियान पूरे देश में चला, जिसमें सबसे अधिक सहयोग राशि राजस्थान की करीब 500 करोड़ रुपये में भी अकेले जोधपुर शहर से सर्वाधिक 214 करोड़ रुपये दान मिला है। जोधपुर के एक भिखारी ने 7 हजार रुपए का आर्थिक सहयोग राम मंदिर के लिए दिया था। चंदा जमा करनेवाले कार्यकर्ताओं ने उसकी हालत देखकर मना किया, तो भी उसने जबरदस्ती दिया।

इसी तरह से अस्पताल में भर्ती एक बीमार महिला ने रामलला के लिए अपने गहने और जेवर दान करने की भावना जताई, लेकिन उसे भी मना कर दिया गया। बाद में उस महिला की मृत्यु हो गई, तो उसके परिवार जनों ने वह ज्वेलरी विश्व हिंदू परिषद को भेंट की। राजस्थान में घर घर जाकर चंदा जुटाया गया था, जिसमें लोगों ने अपार उत्साह के साथ बहुत बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया। राजस्थान के बाद उत्तर प्रदेश सहयोग राशि देने में दूसरे नंबर पर रहा है, जहां से राम मंदिर निर्माण निधि समर्पण अभियान में करीब 200 करोड़ रुपए की राशि एकत्रित हुई है। इसी तरह से राम मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव के विभिन्न आयोजनों में भी अपने सहयोग के लिए लोग बेहद उत्साहित होकर आगे आ रहे हैं।

प्रतिष्ठा महोत्सव में आने वाले लोगों के लिए भोजन व प्रसाद बनाने हेतु राजस्थान से 2100 डिब्बे तेल भेजा जा रहा है, यह तेल वहां सीता रसोई में भोजन व प्रसाद के लिए लगेगा।

राजनीति और धर्म का संगम है भारत...

-हरि जयसिंह

भारत एक बहुआयामी सामाजिक और धार्मिक राज्य व्यवस्था है जिसमें आध्यात्मिक पहलू और भौतिकवाद की लालसा है। इस जटिल परिवेश में, कोई भी भारत के भविष्य के बारे में कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकता।

भारत एक बहुआयामी सामाजिक और धार्मिक राज्य व्यवस्था है जिसमें आध्यात्मिक पहलू और भौतिकवाद की लालसा है। इस जटिल परिवेश में, कोई भी भारत के भविष्य के बारे में कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकता। राजनीति और धार्मिक उत्साह आपस में मिल गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी खुद को राजनीतिक-धार्मिक जगतगुरु के रूप में स्थापित करने के लिए अपना राजनीतिक खेल खेल रहे हैं। वह अपने लक्ष्यों को हासिल करने में सफल होंगे या नहीं, इसकी भविष्यवाणी करना मुश्किल है, लेकिन उनकी महत्वाकांक्षा स्पष्ट है क्योंकि वह 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में राममंदिर का उद्घाटन करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। उनसे अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह करने की भी उम्मीद है।

भाजपा इस समारोह को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में जोर-शोर से प्रचारित कर रही है। उस दिन अयोध्या में 2 लाख से अधिक लोगों के इकट्ठा होने की संभावना है। इस कार्यक्रम को देशभर में विश्व स्तर पर भारतीय दूतावासों में और न्यूयार्क के टाइम्स स्क्वायर में एक प्रायोजित स्क्रीन पर प्रदर्शित किए जाने की भी उम्मीद है। यह समझ में आता है क्योंकि हिन्दू विश्व स्तर पर दिखाई देने वाला समुदाय है। मंदिर के लिए दान दुनिया का सबसे बड़ा दान होने का अनुमान है। निर्माण की देखरेख करने वाले ट्रस्ट की रिपोर्ट के अनुसार इसके 4 ट्रिलियन रुपए (48 मिलियन अमरीकी डॉलर) को पार करने की उम्मीद है।

नेपाल से फलों की टोकरियां और दुनिया की सबसे विशाल अगरबत्ती, जिसकी ऊंचाई 108 फुट है और जो 1470 किलोग्राम गाय के गोबर, 190 किलोग्राम घी और 420 किलोग्राम जड़ी-बूटियों से बनी है, सहित कई उपहार आ रहे हैं। द्वारिका (गुजरात), जोशी मठ (उत्तराखंड), पुरी (ओडिशा) और शृंगेरी (कर्नाटक) स्थित 4 हिन्दू मठों के शंकराचार्य राम मंदिर के उद्घाटन में शामिल नहीं होंगे। माना जाता है कि ये मठ आठवीं शताब्दी के धार्मिक विद्वान और दार्शनिक आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित किए गए थे, जो हिन्दू धर्म के भीतर आध्यात्मिक और धार्मिक नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालांकि द्वारिका और शृंगेरी के शंकराचार्यों ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है लेकिन पुरी मठ के शंकराचार्य अपने निर्णय के बारे में मुखर रहे हैं। शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती ओडिशा के जगन्नाथपुरी में पूर्वाम्नाय गोवर्द्धन मठ पीठ के 145वें शंकराचार्य ने हाल ही में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने से इंकार कर दिया है। राम मंदिर के उद्घाटन समारोह में उनकी आपत्ति का कारण उनका यह मानना है कि यह आयोजन राजनीतिक हो गया है। राम मंदिर उद्घाटन का निमंत्रण मिलने पर निश्चलानंद सरस्वती ने चिंता व्यक्त की कि यह समारोह एक राजनीतिक तमाशे में बदल गया है।

उन्होंने कहा, ''देश के प्रधानमंत्री गर्भगृह में रहेंगे, मूर्ति को छुएंगे और प्राण प्रतिष्ठा समारोह करेंगे। इसे राजनीतिक रूप दे दिया गया है। अगर भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा होती है तो शास्त्रों के रीति-रिवाजों से होनी चाहिए। मैं इसका विरोध नहीं करूंगा और न ही इसमें शामिल होऊंगा। मैंने अपना रुख अख्तियार कर लिया है। आइए आधे सच और आधे झूठ को न मिलाएं। हर चीज को शास्त्रीय ज्ञान के अनुरूप होना चाहिए।''

उत्तराखंड में ज्योति मठ पीठ की अध्यक्षता करने वाले शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने राम मंदिर समारोह में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। वह बताते हैं कि मंदिर का निर्माण सनातन धर्म की जीत का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। उनके अनुसार अयोध्या में पहले से ही एक राम मंदिर था और मंदिर का निर्माण धर्म के लिए कोई उपहार या विजय नहीं है। मंदिर निर्माण दशकों से एक विवादास्पद मुद्दा रहा है, जिसका सामाजिक और राजनीतिक महत्व है जबकि कई हिन्दू इसे सांस्कृतिक और धार्मिक पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में देखते हैं। अन्य लोग बहिष्कार और विभाजन की संभावना के बारे में चिंता जताते हैं।

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भाजपा के लिए एक महत्वपूर्ण राजनीतिक वायदा है जिसे पूरा करने का श्रेय प्रधानमंत्री मोदी लेने को तैयार हैं। हालांकि मंदिर के रूप में देशभर में ''राम राज्य'' की प्राप्ति का अनुमान नहीं लगाया गया है। इसके बजाय इसका प्राथमिक परिणाम आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा की राजनीतिक जीत होने की उम्मीद है। द इकोनॉमिस्ट ने खुलासा किया है कि उत्तर प्रदेश में 2022 के मतदाताओं के सर्वेक्षण से पता चला है कि 74 प्रतिशत मतदाताओं ने मुद्रास्फीति और विकास को अत्यधिक महत्वपूर्ण मुद्दों के रूप में माना जबकि केवल 40 प्रतिशत ने राम मंदिर को समान महत्व दिया।

यदि मोदी इन आर्थिक मुद्दों को निर्णायक रूप से संबोधित करते हैं तो उनके पास महत्वपूर्ण सफलता की संभावना है। दुर्भाग्य से प्रधानमंत्री मोदी के लिए व्यापक आर्थिक मुद्दों को संबोधित करने की तुलना में मंदिर बनाना आसान प्रतीत होता है।

अयोध्या में त्रेतायुग जैसी भव्यता

श्रीराम के जन्म के संदर्भ में संत श्री तुलसीदासजी ने श्री रामचरितमानस में लिखा ही है कि -

जोग लगन ग्रह बार तिथि, सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत, राम जनम सुख मूल।।

आज 22 जनवरी को देश सहित पूरा विश्व राममय होगा। पवित्र,अलौकिक और दिव्य घटना श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा पर अयोध्या में त्रैतायुग का आभास करा रहा है। बड़ा भाई हो तो राम जैसा, बेटा हो तो राम जैसा, प्रजापालक हो तो राम जैसा, राजा हो तो राम जैसा।

देश की रामनामी संस्कृति के प्रवाह में बार-बार व्यवधान आए, पर जब-जब यह ज्ञान-केंद्रित सभ्यता विध्वंस के कगार पर पहुंची, तब-तब किसी महापुरुष का आविर्भाव हुआ, जिसने इस सनातन सभ्यता का पुनरुद्धार किया। अयोध्या में श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा की कुंडली उग्र ग्रहों से सुसंगित है। 22 जनवरी को अयोध्या के मंदिर में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी।

प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त हर जगह किसी ना किसी वजह से चर्चा का विषय बना हुआ।अयोध्या में बन रहे भव्य मंदिर में भगवान श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को दोपहर 12.29 को होने वाली है। इसे लेकर पूरे भारत में आनंद और उन्माद सा छा हुआ है। 22 जनवरी को यह पवित्र और दिव्य घटना, जो बनने वाली है उसके ऊपर बहुत सारी चर्चाएं हो रही हैं।किसी भी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का मुहूर्त खुद दिव्य चेतना नक्की करती है, इसके लिए खुद ईश्वर नक्की करता है। इस पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त।

अयोध्या में अपने ही जन्म स्थान में 22 जनवरी को दोपहर 12 बजकर 29 मिनट को राम मंदिर की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त है। उस वक्त अयोध्या के आकाश में मेष लग्न का उदय हो रहा है, जो 12 बजकर 45 मिनट तक चलने वाला है। मेष लग्न में धर्म और दुनिया के सारे मंदिरों के अधिष्ठाता और शुभ मांगलिक प्रसंग के रचयिता, देवों के आचार्य बृहस्पति का उदय हो रहा है मतलब लग्न में ही गुरु बैठा है और वो गुरु उच्च नवांश में एकदम बलवान है। गुरु ग्रह खुद नवम स्थान और बारहवें स्थान का मालिक है, मतलब धर्म स्थान और मोक्ष स्थान के मालिक हैं। ईश्वर की इच्छा के बिना ऐसा मुहूर्त नहीं निकलता है।भगवान रामजी की प्राण प्रतिष्ठा की कुंडली बहुत ही अच्छी बनी है और इस समय आकाश में उच्च नवांशका गुरु और मकर नवांश का शनि एक दूसरे के साथ संबंध कर रहे हैं तो आध्यात्मिक चेतना अपनी चरम सीमा पर है।

पूरे भारत में 22 तारीख के आसपास का समय भक्तिमय और श्रद्धासे भरपूर रहेगा, ऐसा लग रहा है जैसे अयोध्या में भगवान राम का फिर से जन्म हो रहा।

आज का राशिफल

मेष [illegible]

वृषभ [illegible]

मिथुन [illegible]

कर्क [illegible]

सिंह [illegible]

कन्या [illegible]

तुला [illegible]

वृश्चिक [illegible]

धनु [illegible]

मकर [illegible]

कुंभ [illegible]

मीन [illegible]

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5123

		4				6		1
		7	2				8	
		9	3					2
			1					9
6	2	1	5		9	4	7	3
5					4			
4					3	5		
	3				2	8		
1		6				3		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5122

5	8	9	6	1	7	3	4	2
2	4	1	3	5	9	8	6	7
3	7	6	8	4	2	9	5	1
4	9	2	7	6	8	1	3	5
6	3	8	1	2	5	7	9	4
7	1	5	9	3	4	6	2	8
8	2	3	4	9	1	5	7	6
9	5	7	2	8	6	4	1	3
1	6	4	5	7	3	2	8	9

वर्ग पहेली 5123

संकेत: बाएं से दाएं

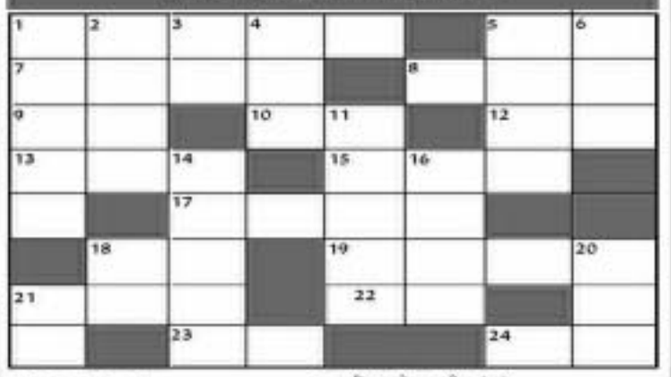

1. पाकिस्तान, सऊदी अरब और 53 अन्य इस्लामी देशों ने 16 जुलाई 2003 को य निर्णय लिया गया कि इस देश को 2005 तक मान्यता दी जाएगी (5)
5. यह विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है (2)
7. बलराम के नामों में से एक, बलभद्र (4)
8. श्रीमान, महोदय, महाशय (3)
9. तीन बूटियों वाला ताश का पत्ता (3)
10. मंगल ग्रह इस रंग का बताया गया है, इंद्रधनुष के रंगों में से एक (2)
12. प्रयोगशाला को अंग्रेजी में यह कहते हैं (2)
13. असुर, राक्षस, दनु नाम की पत्नी से उत्पन्न कश्यप ऋषि के पुत्र (3)
15. आक्रमण, धावा (3)
17. कामना, मनोकांक्षा, तमन्ना, आरजू (4)
18. क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले तारों का समूह, निश्चित संख्या (2)
19. आहार पदार्थ, भोज्य सामग्री (4)
21. पुत्र, आत्मज (3)
22. प्रभु, परमेश्वर (पंजाबी) (2)
23. संबंध से, हेतु, वास्ते (2)
24. उन्नति का समय अभ्युदय काल (2)

ऊपर से नीचे

1. आरंभिक, प्राथमिक, शुरूआती (5)
2. [illegible] (4)
3. यह उत्तराखंड में बहने वाली एक नदी है इसका पौराणिक नाम [illegible] है (2)
4. इस पार का, निकटतटवर्ती (3)
5. यह एक बांग्लादेशी लेखिका है (4)
6. मूल कारण, वजह, हेतु (3)
11. जो सीधा न जाकर बलखाती हुए गया हो (5)
14. [illegible], जंगली, पशुतापूर्ण (5)
16. स्वार्थ, प्रयोजन, अर्थ, मकसद (4)
18. संगीत में स्वरों के विशेष क्रम, शास्त्रीय संगीत की रचना (3)
20. अध्यापक, शिक्षक, गुरु (3)
21. चंद्रमा के रथ 10 घोड़ों में से एक का नाम, आरोहित पशु, हिरण (2)

वर्ग पहेली 5122 का हल

देश के स्वाभिमान की पुर्नस्थापना है श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। आज सौभाग्य का पावन अवसर है। सैकड़ों वर्षो बाद यह शुभ घड़ी आई है...अयोध्या में अपने जन्मस्थान पर रामलला विराजमान हो रहे हैं। पूरे संसार के सनातनी हर्षित, आनंदित और प्रफुल्लित हैं। समूचे विश्व में जयश्रीराम गुंजायमान है। हम सभीसौभाग्यशाली हैं कि हमें यह सुखद दृश्यदेखने का अवसर मिला है।श्रीरामजी की गरिमा के अनुरूप मंदिर निर्माण के लिये पीढ़ियों ने पांच सौ वर्ष तक संघर्ष किया इसमें अनगिनत बलिदान हुए।

राम मंदिर हमारी संस्कृति, हमारी आस्था, राष्ट्रीयत्व और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है। यह सनातन समाज के संकल्प, संघर्ष और जिजीविषा का ही परिणाम है कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्रीराम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो रहा है। यह उमंग और उत्सव का अवसर है,समूचा समाजउल्लास के साथ खुशियां मना रहा है।

राजा राम प्रत्येक भारतीय और विश्व में व्याप्त सनातनियों के आदर्श हैं। वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम जन्मस्थान मंदिर निर्माण के हर्षोल्लास के साथ हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए।कर्तव्यपथ पर प्रतिबद्ध श्रीराम के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे सबके थे और सबको साथ लेकर चलते थे। सबका विश्वास अर्जित करने के लिये अपने सुखों का भी त्याग कर देते थे। वे जितने वीर थे, मेधावी थे उतने ही सहनशील भी। उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और विपरीत परिस्थिति कभी उन्हें विचलित नहीं कर सकती थीं। प्रजावत्सल राजा राम के लिये न्याय और राजधर्म सर्वोपरि था। इन्हींअद्भुत विशिष्टताओं के कारण श्रीराम को आदर्श राजा कहा जाता है। उनकी राज व्यवस्था में न कोई छोटा था न कोई बड़ा था,सभी समान सम्मान के अधिकारी थे। सबको उनकी योग्यता, क्षमता और मेधा के अनुसार काम के अवसर प्राप्त थे। भेदभाव रहित समाज व्यवस्था के लिए रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है। रामराज्य में प्रजा की सुखद स्थिति का रामचरित मानस के उत्तरकांड मेंउल्लेख है-'दैहिक दैविक भौतिक तापा,राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।'अर्थात् रामराज्य मेंशासन व्यवस्था इतनी आदर्श थी कि प्रजा समृद्ध, रोग रहित और आपदा रहित थी।

राष्ट्र के सांस्कृतिक एकत्व के लिए श्रीराम जी ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। वे अपना वनवासकाल पूर्ण करके लंका से सीधे अयोध्या नहीं आये। वे उन सभी स्थानों पर गये जो उनका वन गमन मार्ग था। लौटते समय निषाद, किरात, केवट और वनवासी समाज के सभी प्रमुख बंधुओं को अपने साथ लाये थे। अपने राजकाल में श्रीरामजी ने एक-एक व्यक्ति का विश्वास अर्जित किया और उन्हें संगठित किया। उनका पूरा जीवन राष्ट्र और समाज के लिये समर्पित रहा।हमें ऐसेही राष्ट्र का निर्माण करना है। लगभगपांच सौ वर्षों की दीर्घ प्रतीक्षा और धैर्य के बाद रामलला पूर्व प्रतिष्ठा के साथ अयोध्या आ रहे हैं। यह प्रगति और परंपरा का उत्सव है। इसमें विकास की भव्यता और विरासत की दिव्यता है। यही भव्यता और दिव्यता हमें प्रगति पथ पर आगे ले जाएगी। माननीय प्रधानमंत्री जी के संकल्प के साथ समाज के संघर्ष और आत्मशक्ति का परिणाम है कि आज रामलला विराजमान हो रहे हैं।प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से आग्रह किया है कि 'जब अयोध्या में प्रभु राम विराजमान हों, तब हर घर में श्रीराम ज्योति जलाएं, दीपावली मनाएं।'रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा अवसर परहमने प्रदेश के शहरों और ग्रामों में रोशनी और दीप जलाने की तैयारी की है।प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में श्रीराम कथा सप्ताह मनाया जा रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भव्य राम मंदिर निर्माण के निमित्त एक सप्ताह तक देश के सभी मंदिरों तथा तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया है। हमने मध्यप्रदेश में स्वच्छता से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से समृद्धि के लिए सभी तीर्थ स्थलों, मंदिरों तथा नदियों में स्वच्छता अभियान चलाया है। प्रभु श्रीराम ने वनवासकाल के लगभग 11 वर्ष चित्रकूट में व्यतीत किये हैं। हमने तीर्थ स्थल चित्रकूट सहित रामवन पथ गमन मार्ग के 1450 किलोमीटर के 23 प्रमुख धार्मिक स्थलों का विकास करने का निर्णय लिया है। इसमें अधोसंरचना विकास के कार्यों के साथ-साथ धार्मिक चेतना, आध्यात्मिक विकास और राम कथा से जुड़े आयामों को भी शामिल किया जाएगा।भगवान कामतानाथ के परिक्रमा पथ का निर्माण कार्य भी शीघ्रप्रारंभ होगा।

अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का यह ऐतिहासिक क्षणहम सभी के लिये प्रेरणा का अवसर है। भारतके सांस्कृतिक वैभव और समृद्धिके इस पावनकाल में यशस्वी प्रधानमंत्री जी के देश को आत्मनिर्भर और सर्वश्रेष्ठराष्ट्र के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है, हम इस संकल्प की सिद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत को यदि सशक्त औरविकसित राष्ट्रकी पंक्ति में अग्रणी बनाना है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा किसमाज संगठित रहे, समरस रहे, एकजुट रहे और प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर बने। यदि भारत राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है, तो पूरे समाज को आत्मनिर्भर बनना होगा, तभी रामराज्य की कल्पना सार्थक हो सकेगी। आज रामलला अपने जन्म स्थल पर विराजमान हो रहे हैं इस अवसर पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई...।

आज का दिन आस्था, श्रद्धा का यादगार दिन हो जाएगा...

मंदसौर/उज्जैन, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। सोमवार अयोध्या में नवनिर्मित मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का दिन तो है ही अपने परम पूज्य को श्रद्धा, समर्पण औरआत्मीय भाव से प्रतिष्ठित किया जाएगा। इसी के प्रतीक स्वरूप पूरे देश भर के गांव, शहरों के सभी छोटे-बड़े मंदिरों में सुबह से लेकर शाम तक सामाजिक धार्मिक संस्थाओं द्वारा स्थानीय नगर के आमजन के साथ सामूहिक पूजा अर्चना, दीप प्रज्वलन, भजन, प्रसादी, भंडारों के आयोजन के कारण कभी ना भूलने वाला राममय श्रद्धा दिवस नजर आएगा। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जब से रामलला का प्राण प्रतिष्ठा दिवस घोषित हुआ। उसी दिन से रामजी की प्रेरणा से आमजन में इस दिन को लेकर उत्साह का संचार नजर आ रहा है। लगता है अब प्रतिवर्ष 22 जनवरी का दिन इसी तरह प्राण प्रतिष्ठा दिवस के रूप में उत्साह और श्रद्धा के साथ विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया जाता रहेगा। पूरे देश के जनमानस ने जिस तरह इसकी तैयारी से लेकर प्राण प्रतिष्ठा तक जो व्यक्तिगत आस्था के साथ भौतिक उपस्थिती देकर भी इसे यादगार बना दिया है।

चन्द्रमोहन भगत

हर आम हिंदू जो सुबह से शाम तक अपना, अपने परिवार का पेट भरने के लिए किसी ना किसी काम में जूटा रहता है। इसलिए शास्त्र, ज्योतिष, वेद अध्ययन करने का उसे समय ही नहीं मिलता है, ना ही वह ज्ञाता है। किन्तु, परम पूज्य राम के लिए श्रद्धा हर एक के मन, कर्म, आचार, विचार, व्यवहार में संचारित रहती है। ऐसा जो मनुष्य, जिसको मानता है, उसमें निहित होता है। जो परिवार, समाज, प्रकृति से उसे प्राप्त होता है। कोई पंडित, मौलवी पुजारी, मानव मन में ठूंस नहीं सकता है। जब तक वह खुद स्व प्रेरित वचन आचार से स्वीकार न करे। हर धर्म में कोई दिन, वार, माह, समय काल, रात-दिन, ब्रह्म मुहूर्त, राशि मुहूर्त सब अलग-अलग तय हैं। कारण भी शास्वत और वैज्ञानिक है। क्योंकि, अभी जहां दिन में सूर्य देव नजर आ रहे हैं तो पृथ्वी पर कई क्षेत्र में अभी चंद्र देव दर्शन दे रहे होंगे। ऐसे में सूर्योदय और चंद्रोदय के कारण सभी के समय काल में अंतर आएगा ही। अत: कोई एक समय कहीं शुभ होगा। विपरीत प्राकृतिक समय और ग्रहों की दर्शन स्थिति के कारण कहीं ब्रह्मांड संचालन के कारण ग्रहण के दृश्य अभाव के कारण वहीं क्रियाएं अमान्य कहलाती है।

उदाहरण मानिए अगर भारत में ही देखें तो कहीं सुबह चार से पांच बजे ही सूर्य दर्शन हो जाते हैं तो कहीं 6 बजे के बाद से, कहीं शाम साढ़े चार बजे से ही अंधेरा होना शुरु हो जाता है तो कहीं साढ़े पांच- छह बजे से। यह वातावरण ब्रह्मांड की रचना अनुसार चल रहा है। इसमें मनुष्य जाति का कोई रोल नहीं है। बावजूद इसके सुबह-शाम, शुभ-अशुभ मुहूर्त दिशा और समय काल को मुद्दा बनाकर मनुष्य ने ही दुनिया भर में बहस छेड़ रखी है। क्या यह संभव है कि जिस परमेश्वर ने हमें यह पृथ्वी प्रकृति पर्यावरण जल जमीन जंगल पहाड़ जीवन मृत्यु से रूबरू कराया है। इस स्व संचालित प्रकृति को मनुष्य बदल सकता है! पृथ्वी का घूमना रोक सकता है! पृथ्वी के जिस हिस्से में इस समय रात होती है वहां सूर्योदय करा सकता है, जहां दिन होता है वहां चंद्रोदय कर सकता है ! फिर कैसे कोई दावा कर सकता है कि ऐसा या वैसा करने से ब्रह्मांड को बनाने वाला नाराज हो जाएगा या खुश होगा।

मनुष्य की अपनी गलतियों से उपजी प्राकृतिक आपदा को भी परमेश्वर की नाराजी बताता है। वह परमेश्वर को कैसे पढ़ सकता है? कैसे सही गलत ठहरा सकता है! ऐसी बातें सुनने ना सुनने समझने ना समझने वाली तार्किक अतार्किक, तथ्यात्मक, अ तथ्यात्मक धार्मिक बहस का अकारण ही दुनियाई मनुष्य में कालजई बहस दिनचर्या का विषय बन चुकी है। जिसका उदय रोज हो सकता है, पर अंत कभी नहीं..! इसलिए श्रद्धा से अपने इष्टदेव मर्यादा पुरुषोत्तम राम जी के प्राण प्रतिष्ठा को मन आत्मा और प्राकृतिक व्यवहार के साथ मनाएं ताकि विश्व जन में शांति सद्भाव का संचार हो।

रामजी के स्वागत में भगवा पताकाओं से सजा बड़े बालाजी मंदिर क्षेत्र, आज होंगे अनेक आयोजन

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। श्री बड़े बालाजी मंदिर पुराना बस स्टैंड मंदसौर पर 22 जनवरी, सोमवार को अयोध्या में श्री राम मंदिर उद्घाटन को महापर्व के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन को आनन्द महोत्सव के रूप में मनाते हुए बड़े बालाजी मंदिर पुराना बस स्टेण्ड पर पर भव्य आयोजन होंगे। मंदिर क्षेत्र को भगवा पताकाओं से सजाया गया है तथा राममंदिर, लंका दहन, अशोक वाटिका की मनोरम झांकियों के दर्शन भक्तों को होंगी। 11 क्विंटल नुक्ती के प्रसाद का वितरण भी होगा जिसको लेकर तैयारियां चल रही है।

उक्त जानकारी देते हुए समिति अध्यक्ष पं. दिलीप शर्मा, प्रवक्ता रवि ग्वाला ने बताया की लगभग 500 वर्षों के बाद भव्य राम मंदिर बनकर तैयार हो रहा है और यह सनातन भक्तों को समर्पित होगा। इसी खुशी के स्वरूप मंदिर समिति 22 जनवरी को प्रात: से संध्या तक उत्सव आनंद महोत्सव बनाया जाएगा। जिसमे हरिहर भक्त मंडल उज्जैन द्वारा सुंदरकांड व उद्घाटन के समय भगवान श्री राम, लक्ष्मण, माता सीता व बालाजी महाराज की भव्य शाही महाआरती होगी। महाआरती में ढोल धमाके आतिशबाजी व कई भव्य रंगारंग सांस्कृतिक आयोजन होंगे। तथा बालाजीं को 11 क्विंटल नुकती का भोग लगाकर भक्तों में प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

आठ डिग्री से नीचे पहुंचा तापमान

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। उत्तर भारत से आ रही बर्फीली हवाओं से तापमान में गिरावट का दौर जारी है। तापमान 8 डिग्री के नीचे पहुंच गया है। रविवार को सीजन की सबसे सर्द रात रही है। मौसम विभाग ने रविवार-सोमवार के लिए प्रदेश में कड़ाके की ठंड का अलर्ट जारी किया है। इस दौरान न्यूनतम तापमान 8 डिग्री के नीचे रहेगा वहीं अधिकतम तापमान 20 डिग्री के नीचे बना रहेगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया, 'पिछले 24 घंटे में जेड स्ट्रीम 200 से 250 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से चल रही थी। इस वजह से प्रदेश के उत्तरी हिस्से में पिछले 2 दिन से कोल्ड-डे की स्थिति बनी रही। शनिवार को भी सर्द हवाओं का असर रहा। वेस्टर्न डिस्टरबेंस भी एक्टिव है। आने वाले 2 दिन में उत्तरी हवाओं का असर ज्यादा रहेगा। इस कारण कोल्ड-वेव और कोल्ड-डे की स्थिति बनी रहेगी।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार की मौत

नीमच, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। शहर के सिटी थाना क्षेत्र के ग्राम मालखेड़ा गांव में एक सड़क हादसा हुआ। हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। दरअसल, मृतक रोहित पिता जगदीश मेघवाल उम्र 25 वर्ष निवासी सरजना अपनी बाइक पर सवार होकर मालखेड़ा से नेवड़ की ओर जा रहा था। इसी दौरान एक तेज रफ्तार ट्रक ने उसे टक्कर मार दी। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

ग्रामीणों की सूचना पर एम्बुलेंस मौके पर पहुंची, घायल को नीमच के बड़े अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं हादसे के बाद ट्रक को मालखेड़ा के ग्रामीणों ने रोक लिया। हालांकि ट्रक ड्राइवर मौके से फरार होने में कामयाब रहा। वहीं रविवार सुबह मृतक युवक को शव का नीमच के बड़े अस्पताल में पोस्टमॉर्टम किया गया। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया। मामले में पुलिस में मर्ग कायम कम कर जांच शुरू कर दी है। मामले में नीमच सिटी थाने के अनिल पुरोहित ने जानकारी देते हुए बताया कि हादसा शनिवार रात्रि को हुआ था। हादसे में रोहित नामक युवक की मौत हुई है। जिनके शव का पोस्टमॉर्टम कर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

श्री राम व बालाजी के जयकारों के साथ निकली कलश यात्रा

खजूरीआंजना, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर जिले के छोटे से ग्राम खजुरी आंजना में रविवार को पूरी तरह भक्तिमय देखने का नजारा मिला है आपको बता दे की अयोध्या में भगवान श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा कों लेकर 22 जनवरी को एक बड़ा आयोजन होने जा रहा है जिसको लेकर राम जानकी मंदिर से लेकर पूरे नगर व ग्राम में भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया गया है इस कलश यात्रा में जय श्री राम व बालाजी महाराज के नारे लगाते हुए पूरे गांव में भव्य यात्रा निकाली गयी यात्रा सुबह 10:00 बजे से शुरू हुई जो की 2:00 बजे तक पूरे गांव का नगर भ्रमण किया गया प्राप्त जानकारी के अनुसार यात्रा राम जानकी मंदिर से शुरू होकर गांव के अनेक मार्गो से होती हुई निकली इस कलश यात्रा में काफ़ी महिलाएं व पुरुष बच्चे शामिल थे यात्रा गांव के बालाजी मंदिर चौराहा से लेकर पूरे गांव की गलियों में होती हुई निकली भव्य कलश यात्रा के दौरान गांव के युवक युवतियां ढोल बैंड डीजे की धुन के साथ शोभा यात्रा में गरबा नृत्य भक्ति नृत्य आकर्षण का केंद्र बना रहा कलश यात्रा राम जानकी मंदिर से शुरू होकर बस स्टैंड हनुमान मंदिर होते हुए पूरे गांव में होकर समापन राम जानकी मंदिर पर हुई कलश यात्रा शुरू होते ही जगह-जगह डोल डीजे की थाप पर बालिकाओं व महिलाओं ने नत्य किया वापस राम जानकी मंदिर पर जाकर समापन हुआ।

स्टेशन बालाजी मंदिर पर महाप्रसादी आज

पिपलियामंडी, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। अयोध्या में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष में स्टेशन बालाजी मंदिर पर 22 जनवरी को विभिन्न आयोजन होंगे। प्रात: 9:30 बजे से दोपहर 12:00 तक सुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा, उसके बाद महाआरती होगी। तत्पश्चात दोपहर 1:00 बजे महाप्रसादी का आयोजन किया जाएगा । स्टेशन बालाजी मंदिर समिति के अध्यक्ष हरिनंदन बोराना एवं पुजारी मंगलदास बैरागी ने यह जानकारी दी।

27वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव में विनय शर्मा ने मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर के प्राचार्य डॉ. एलएन शर्मा ने बताया कि भारत सरकार युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के क्षेत्रीय निदेशालय दिल्ली द्वारा 27वां राष्ट्रीय युवा महोत्सव 12 से 16 जनवरी तक महाराष्ट्र के नासिक में सम्पन्न हुआ। इसमें राजीव गांधी पी.जी. कॉलेज मंदसौर केराष्ट्रीय सेवा योजना केस्वयंसेवक विनय शर्मा का चयन हुआ था। इस 27 वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव में विनय शर्मा ने अपने कॉलेज का प्रतिनिधित्व किया। विनय ने अपनी शिक्षा के साथ-साथ एनएसएस स्वयंसेवक के रूप में समाज में शिक्षा, जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं स्वच्छता अभियान आदि का उल्लेखनीय कार्य किया है। राष्ट्रीय युवा महोत्सव में सहभागिता कर कॉलेज लौटने पर जनभागीदारी अध्यक्ष श्री नरेश चंदवानी, प्राचार्य डॉ.एल.एन.शर्मा, जिला संगठक एनएसएस डॉ. के.आर सूर्यवंशी एवं कार्यक्रम अधिकारी प्रो.अनिल कुमार आर्य एवं डॉ. गोरा मुवेल ने सरहाना की और शुभकामनाएं प्रेषित की।

झाड़ियों मे दिखा मगरमच्छ, मशक्कत से पकड़ा

बादपुर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। मल्हारगढ़ तहसील के गांव छोटी गुड़भेली में गाँव के पास झाड़ियों में ग्रामीण गोविन्द सिंह, मुकेश, प्यारसिंह सहित अन्य नें विशालकाय मगरमच्छ करीब 10 फिट लम्बा 3 क्विंटल वजनी देखा गया जिसके बाद ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी वन विभाग की टीम कुछ ही देर में मगरमच्छ को पकड़ने पहुंचे इसके बाद ग्रामीणों की मदद से वन विभाग की टीम ने मगरमच्छ को पकड़ा व जिसके बाद बड़े जलाशय मे छोड़ा जाएगा। ग्रामीण गोविन्द सिंह, प्यार सिंह, मुकेश, जयदीप राठौर सहित अन्य ग्रामीण व वन विभाग की टीम के साथी मौजूद रहे।

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर लूनाहेडा में तैयारी पूर्ण

लूनाहेड़ा, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर गांव लूनाहेडा में स्वच्छता से लेकर सभी कार्य चरम सीमा पर है। रविवार को विवेकानंद ज्ञान मंदिर लूनाहेडा द्वारा ट्रैक्टर ट्राली में झांकियां बनाई गई। इसमें छात्र-छात्राओं ने राम सहित अन्य किरदार बनकर झांकियों में सुभिजित थे। झांकियों का चल समारोह लूनाहेडा,चावली, कामलिया, लसुड़िया राठौर में भ्रमण कर पून: चल समारोह स्कूल प्रांगण पहुंचा। चल समारोह के दौरान राम सहित अन्य किरदार बनकर बैठे छात्रों का पूर्व उप सरपंच महेश पाटीदार,नगर भाजपा अध्यक्ष कमलेश कुमावत,राजु पाटीदार सहित अन्य लोगों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इसी तरह सोमवार को चार भुजानाथ मंदिर प्रांगण से सुबह 8 बजे से 11 बजे तक कलश यात्रा का आयोजन होगा तथा 12 बजे महाआरती होगी। बाद में भंडारे का सहभोज होगा।

आज मनेगी श्री राम दिवाली... पेज 1 से जारी

में खरीदी करने आए। ग्रामीणों ने बताया कि हमारे गांव में जश्न जैसा माहौल है। दीपावली पर जितने पटाखे हर साल खरीदते हैं, उतने ही पटाखे रामलला के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होने पर भी फोड़ने की तैयारी कर रहे हैं। रामसिंह सिसौदिया कहते हैं कि घर को दीप और फूलमालाओं से सजाने की तैयारी है। राम मंदिर को बनता हुआ देखने का सौभाग्य मिला है तो उत्सव मनाने से कैसे पीछे हट सकते हैं। मैं 5 हजार के पटाखे खरीदकर ले जा रहा हूं। पूरा परिवार फिर एक साथ दीपावली मनाएगा।

50 हजार दीपक गुजरात से बुलाए–मिट्टी के दीपक का कारोबार करने वाली श्रीमती सरला प्रजापति कहती हैं कि दस दिन पहले ही से लोग दीपक की डिमांड करने लगे थे। हमने 22 जनवरी के उत्साह को देखते हुए 50 हजार दीपक बाहर से भी बुलाए हैं। दो दिनों में दीपोत्सव की तरह ही बाजार में उत्साह रहेगा। लोग अपने घरों को दीयों से सजा सकें, इसलिए विभिन्न डिजाइन के आकर्षक दीये बुलाए गए हैं। सामान्य दिनों में रतलाम और आसपास के जिलों से आने वाले दीयों से डिमांड पूरी हो जाती है। इस खास अवसर को देखते हुए गुजरात-महाराष्ट्र से भी दीये बुलाना पड़ रहे हैं।

फूलो के कारोबार में भी उछाल–प्राण प्रतिष्ठा समारोह को देखते हुए सिर्फ पटाखा बाजार में ही उत्साह नहीं है, फूल कारोबारी और लाइटिंग कारोबारी में भी खूब उत्साह है। वहीं, लाइटिंग व्यापारी पन्नालाल श्रोत्रिय का कहना है कि लोग घर, दुकान और प्रतिष्ठानों पर लाइटिंग करा रहे हैं। ऐसी लाइटिंग आमतौर पर दीपावली या शादी समारोह पर ही कराते हैं। हर दिन दो से तीन घरों में जाकर लाइटिंग कर रहा हूं।

पहली बार दिवाली से इतर पटाखों के लाइसेंस–22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में लोग आतिशबाजी कर सकें, इसके लिए जिला प्रशासन ने अस्थाई दुकानों को पटाखा लाइसेंस दिए हैं। मंदसौर ही नहीं रतलाम बुरहानपुर समेत कई जिलों में अस्थाई लाइसेंस दिए गए हैं। अब तक केवल दिवाली के मौके पर ही प्रशासन अस्थाई लाइसेंस देता आया है। एक्सपर्ट का कहना है कि उनकी नजर में ये पहला मौका है, जब दिवाली से इतर किसी अन्य मौके पर पटाखों के लिए अस्थाई लाइसेंस जारी किए गए हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से निखरती है विद्यार्थियों की प्रतिभा-धाकड़

नगरी, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। विद्यालय में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों से विद्यार्थियों की विभिन्न क्षेत्रों में छूपी अप्रत्यक्ष प्रतिभाओं को निखरने का मौका मिलता है। शासकीय विद्यालयों में छात्र छात्राओं का सर्वांगीण विकास को लेकर शिक्षक हमेशा सक्रियता से कार्य कर रहे हैं ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सह शैक्षणिक क्षेत्रों में विकास के लिए निरंतर नवाचार हो रहे हैं।

उक्त विचार रविवार को ग्राम उमाहेड़ा के शासकीय प्राथमिक विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में अतिथि के रूप में उपस्थित छात्र छात्राओं एवं नागरिकों को संबोधित करते हुए संकूल केंद्र रिछालाल मुहां के प्राचार्य शालिगराम धाकड ने व्यक्त कियें। हाई स्कूल आक्या प्राचार्य सुभाष चंद्र जोशी ने भी उद्बोधन दिया। नगरी नप विधायक प्रतिनिधि देवेंद्र अटोलिया, आक्या सरपंच विनोद माली भी अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। विद्यालय के नन्हें छात्र छात्राओं ने देश भक्ति, धार्मिक एवं राजस्थानी गीतों पर एक से बढ़कर एक आकर्षक प्रस्तुतियां दी। इस दौरान आक्या सचिव विनोद सोनी, चंद्रशेखर अटोलिया, लक्ष्मी नारायण हकवाड़िया, लोकेन्द्र सिंह डोडिया, सेवानिवृत्त शिक्षक सुरेश जोशी, पुष्कर कुमावत, भरत जड़वासा कार्यक्रम का संचालन विक्रम सिंह राठौड़ ने एवं आभार संस्था प्रधान राजश्री सोनी ने माना।

20 घंटे में 100 किलो कलर से बनी रंगोली

मंदसौर/उज्जैन, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। शहर में 52 कवॉटर हनुमान मंदिर पर राम लला के स्वागत में सब और रंगोली बनाई जा रही है। घर ही नहीं शायद हर मंदिर में भी परंपरा के रंग रंगोलिओ के रूप में सज रहे हे ऐसे ही सुवासरा शहर में 52 कवॉटर हनुमान मंदिर पर 35-35 वर्ग फुट की रंगोली आकर्षण केंद्र बनी हुई है। यह रंगोली एक बालक बालिका ने मिलकर बनाई है। रंगोली कलाकार पीयूष डपकारा और रानू रावत दोनो ने मिलकर रंगोली बनाई हैं यह रंगोली में 100 किलो कलर का प्रयोग किया गया। कलाकार पीयूष दिलीप कुमार डपकारा का कहना हे की यह उनकी यह पहली इतनी बड़ी रंगोली है इतनी बड़ी रंगोली की शुरुआत उन्हें अयोध्या राम भगवान से की हैं।

व्याख्यान एवं भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

मनासा, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। शासकीय रामचंद्र विश्वनाथ महाविद्यालय मनासा में भगवान श्री राम के अयोध्या प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम(साप्ताहिक) अंतर्गत भगवान श्री राम जी के जीवन चरित्र पर आधारित व्याख्यान एवं भाषण प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के विकासखंड समन्वयक महेंद्रपाल सिंह भाटी रहे जिन्होंने विस्तार से भगवान श्रीराम जी के जीवन पर प्रकाश डाला। साथ ही भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसमें प्रथम स्थान पायल शर्मा, द्वितीय स्थान पर कृष्ण गोपाल रहे। इस अवसर पर मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के विकासखंड समन्वयक महेंद्रपाल सिंह भाटी, महाविद्यालय प्राचार्य डॉ.एम.एल. धाकड़, डॉ.अनिल जैन, डॉ. जी के कुमावत, रासेयो जिला संगठक प्रो. अरुण कुमार चौरसिया, कार्यक्रम अधिकारी प्रो. आशा पटेल, प्रो. पंकज रसानिया ,प्रो. जितेंद्र अरोलिया, प्रो. सुदेश कलम सहित महाविद्यालय स्टाफ एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

जय श्री राम मय हुआ नाटाराम, कलश एवं शोभायात्रा निकली

नाटाराम/नाहरगढ़, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। आज 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण कर भगवान श्रीराम की मुर्ति की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। इसी उत्सव को लेकर 21 जनवरी 2024 को नाटाराम में रामभक्तों द्वारा भव्य कलश यात्रा एवं धार्मीक यात्रा निकाली गई। जिसमें ढोल,डीजे के साथ ही महिलाएं पारम्परिक वेश भूषा में सिर पर कलश धारण कर चल रही है। धार्मीक यात्रा का गांव में भव्य जगह-जगह मंदिरों पर स्वागत किया गया। सामाजिक संस्थाओं एवं समाज प्रमुखों द्वारा भी स्वागत किया गया। मुख्य चोहारा पर मध्यप्रदेश जनअभियान परिषद की नवांकुर संस्था नाटाराम प्रगतिशील विकास समिति एवं ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति नाटाराम ,ग्राम पचायंत ,बालाजी भक्तों एवं समुह की महिलाओं द्वारा तिलक लगाकर यात्रा का स्वागत कर नि:शुल्क 1100 दीपक वितरीत किये गयें। साथ ही 21 एवं 22 जनवरी 2024 को रात को हर घर दीपक लगाने की अपील की की गई। आज सोमवार को अयोध्या में होने वाले मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का लाईव प्रसारण भी किया जाएगा। नाटाराम बालाजी मंदिर पर आज सोमवार को महाप्रसादी का वितरीत महाआरती के पश्चात किया जाएगा। राजाखेडी आज सोमवार को सुबह कलश यात्रा निकालकर महाप्रसादी वितरीत कि जाएगी। शाम को धार्मीक यात्रा भी निकाली जाएगी। यह जानकारी हरिओम गंधर्व नाटाराम ने दी।

कलयुग में त्रेता युग का मंगलमय पर्दापण

कल्पनातीत अद्भूत-अलौकिक क्षण है हमारे लिये

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। सतयुग-त्रेता-द्वापर और कलियुग प्रत्येक युग में गीता के अनुसार जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का विस्तार होता है। भगवान धरती पर अवतार लेते आ रहे है और यह परम सौभाग्य केवल भारत भूमि को ही प्राप्त है जहां भगवान के 24 अवतार हो चुके है और 4 लाख 32 हजार वर्षो के इस कलयुग के अंत में भगवान का कल्कि रूप में अवतार लेना शेष है। कलियुग के अभी केवल पांच हजार से कुछ अधिक वर्ष ही बीते है परन्तु आज 22 जनवरी पौष शुक्ल द्वादशी को रामलला के रूप में भगवान राम का प्राकट्य हो जायेगा। यह कभी किसी ने सपने में भी सोचा था परन्तु यह चमत्कार आज दिन को 12.20 बजे होने जा रहा है जिसके साक्षी बनने-भगवान रामलला के दिव्य दर्शन करने का परम सौभाग्य भगवान ने प्रदान किया है यह सचमुच कलयुग में त्रेता युग का वह अद्भूत अलौकिक अविस्मरणीय ऐतिहासिक दिव्य दर्शनीय क्षण होगा जिसके जीते जी हम साक्षी होंगे। सम्पूर्ण भारत ही नहीं विदेश के कई राष्ट्र आज राममय हो जावेंगे।

पतंजलि योग गुरू बंशीलाल टांक ने रामलला के इस दिव्य प्राकट्य प्राण प्रतिष्ठा दीपावली महामहोत्सव में हम अपने घर को अयोध्या के रूप में सजा संवार कर दिवाली के रूप में दीपक लगाकर परिवार इष्टमित्रों सहित अपने को अयोध्यावासी ही समझकर जीवन को धन्य धन्य कर लेवे।

जयश्री राम, जय श्री रामलला

बंशीलाल टांक

होगी प्राण प्रतिष्ठा

पाँच बरस के रामलला
मंदिर बना विशाल
मोहनी मूरत देख के
नयन हुए निहाल।
राममय देश हुआ
सजा अयोध्या धाम
द्वार-द्वार दीप जले
आएंगे श्री राम।
बरसों बाद फिर
जागी राम निष्ठा
बाइस जनवरी 24
होगी प्राण प्रतिष्ठा।

नंदकिशोर राठौर, मंदसौर

पहली कारसेवा-30 अक्टूबर 1990

सरयू पुल पर मुल्ला मुलायम की पुलिस का निशाना बने थे कारसेवक

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर के लिए वैसे तो पूरे 500 सालो से लगातार युद्ध होते रहे। कभी मुगलो का तो फिर हिन्दुओ का कब्जा होता रहा। लेकिन, देश की आजादी के बाद लगतार चले आंदोलनो के क्रम में पहली कारसेवा 30 अक्टूबर 1990 को की गई। इसके लिए देश भर से लाखो लोग अपने-अपने साधनो से अयोध्या पहुंचने के लिए निकले। मैं भी ऐसा खुश किस्मत रहा कि मुझे भी इस कारसेवा में अयोध्या जाने का मौका मिला।

पूरी तारीख तो याद नहीं। लेकिन, 22 या 23 अक्टूबर को कई कारसेवक बसो के माध्यम से सुवासरा पहुंचे। यहां से अवध एक्सप्रेस में सवार होकर सभी कारसेवक 'जय-जय सियाराम' और 'राम लला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे' का जयकारा लगाते हुए राजस्थान बार्डर के अंतिम स्टेशन रूपवास पहुंचे थे कि वहां एनाउंस हो गया कि ट्रेन यहां से आगे नहीं जाएगी। सभी कारसेवक ट्रेन से उतरे। करीब 1 घंटे बाद योजना बनी कि किसी भी तरह 30 अक्टूबर को अयोध्या पहुंचना है। योजना के तहत एक जत्था पैदल निकल ही रहा था कि एक मालगाड़ी रुकी। कई कारसेवक उस मालगाड़ी में चढ़ गए। फतेहपुर सिकरी के कुछ पहले मालगाड़ी रुकी तो उसमे से उतरे। फिर वही परेशानी कि जाए कहां और कैसे कि समय पर अयोध्या पहुंच सके।

हम सभी लोग पैदल ही चल दिए। बताया गया कि श्मशाबाद होते हुए करीब 40 किलोमीटर चलने पर आगरा क्रास हो जाएगा। रास्ते में एक ट्रेक्टर मिला। जिसकी ट्राली में बैठ गए। कुछ देर बाद उसका भी टायर पंचर हो गया। मंदसौर से निकले कारसेवको के एक ग्रुप में मैं स्वयं आशुतोष नवाल, तत्कालीन सुवासरा विधायक और वर्तमान उप मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश श्री जगदीश देवड़ा, तब के सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य और बाद में वकील बने स्व. गणेश मोड़, मेरे मित्र स्व. देवेन्द्र शर्मा ही बचे। शेष अलग-अलग ग्रुप में अलग रास्तो से निकले। हम फिरोजाबाद पहुंचे। वहां से टुण्डला गए। टुण्डला से ट्रेन का सफर कर कानपुर पहुंचे। वहां से नवजीवन समाचार पत्र लखनऊ ले जानी वाली जीप में बैठकर लखनऊ पहुंचे। जहां मिले एक सज्जन ने टेंपो में बैठाकर 16 किलोमीटर दूर चिनहट जाने को कहा। हम चिनहट पहुंचे। टेम्पो वाले ने ही हमें एक आश्रम में रुकवाया और बताया कि आगे की जानकारी यहीं से मिलेगी। हम लोगो ने वहीं कुए से पानी खींचकर स्नान किया। तब तक पूड़ी और आलू की सब्जी आ गई। भोजन करने के बाद हमने महाराजजी से पूछा कि अब अयोध्या तक कैसे पहुंचे। उन्होंने कहा कि अभी दो दिन शेष है। आप लोग गोण्डा की बस में बैठ जाओ, वहां पुलिस ज्यादा लगी होगी। पर अपने कोई न कोई साथी आप तक पहुंच जाएगा। यह सुनकर हमने अपने झोले उठाए। अपनी कॉपी-किताबे उपर जमाई, जिससे कि लगे कि हम स्टूडेंट है और खराब माहौल होने के कारण घर जा रहे है।

कीचड़ भरे तालाब से निकले...

गोण्डा उतरते ही वहीं हुआ, जिसके लिए महाराजजी ने कहा था। चारो तरफ पुलिस ही पुलिस थी। हम चारो नीचे उतरे और रिक्शा तलाशने लगे। एक सायकल रिक्शा वाला हमारे पास आया और बोला कि सामने की तरफ चलो। उस तालाब में उतरकर दूसरी तरफ आ जाओ। करीब घुटने तक पानी और कीचड़ से भरे तालाब में चलकर दूसरी तरफ निकले। जहां चाय की होटल दिखी। वहां लगे नल से खुद को साफ किया और जूतो को धोया। हम लोगो ने चाय पी और पैसे देने लगे तो चाय वाले ने कारसेवक होने के नाते पैसे लेने से मना कर दिया।

बड़ी झांझरी के प्रधान से मुलाकात...

चाय की दुकान पर ही समीप के गांव बड़ी झांझरी के सरपंच सांवली मोहन दुबे से मुलाकात हो गई। उन्होंने दो सायकल रिक्शा बुलवाए और हमें अपने गांव ले गए। वहां देर तक राजनीतिक, सामाजिक और अयोध्या आंदोलन को लेकर चर्चा चली। जब उन्हें पता चला कि जगदीश जी मंदसौर के सुवासरा से बीजेपी के विधायक है तो वे बहुत खुश हुए। समीप के एक और गांव के प्रधान बजरंग प्रसाद पांडे भी वहां आ गए थे। रात्रि में भोजन कर वहीं विश्राम किया। सुबह पांडे जी आ गए कि सुबह का भोजन मेरे यहां करना पड़ेगा। हमने उनके यहां भोजन किया और फिर सायकल रिक्शा लेकर आगे को निकले।

अचलपुर के भोला ने पहचाना...

सायकल रिक्शा वाले ने कुछ किलोमीटर चलने के बाद चाय पीने के लिए एक रेस्टोरेंट पर रिक्शा रोका। दोनो रिक्शा चालक और हम चारो चाय पी रहे थे कि इसी दौरान एक साईकल पर युवक आया। उसने पहचान लिया कि कारसेवक है। उसने मेरे पास आकर कहा कि अयोध्या जा रहे हो। मैने कहा कि हां, उसने कहा कि थोड़ा से आगे मैं खड़ा हूं। मेरा गांव यहीं है, रात्रि में सभी जन साथ चलेंगे। हमने कहा ठीक है, ऐसा कर लेते है। रिक्शा वाले को उसके गांव के रास्ते पर रुकवाया। उनको पेमेंट दिया और भोला भी साईकल से उतरकर हमारे साथ पैदल चला। गांव में पहुंचे तो उनके परिवार के मुखिया श्री भूपसिंह एडव्होकेट से मुलाकात हुई। उन्होंने चार चारपाई आंगन में रखवा दी। कहा कि शाम को भोजन कर यहीं विश्राम करना है।

विधायक के यहां राब खाई...

रात्रि करीब 11 बजे हमको उठाया गया। वहां से जत्था पैदल ही निकला। रास्ते में अनेक जगह गुड़ और पानी पिलाया गया। कहीं चाय पिलाई गई। करीब 2 बजे वजीरगंज के भाजपा विधायक के घर पहुंचे। जहां बाड़े में चारे के पूले बिछाकर रखे थे। सभी को वहां आराम करने को कहा गया। तभी गरमागरम मक्की की राब और गुड़ आ गया। जिसे खाकर तरोताजा महसूस किया। आधे घंटे बाद एक बार पुनः जत्था चल निकला।

30 अक्टूबर सुबह सरयू पुल...

30 अक्टूबर की सुबह सभी ओर से कारसेवको के जत्थे सरयू पुल पर पहुंच रहे थे। हम भी पैदल चलते हुए सुबह करीब 6.30 बजे हम लोग सरयू पुल पर पहुंचे। यहां भारी मात्रा में पुलिस तैनात थी। पुल से आवागमन बंद किया हुआ था। करीब 8 बजे तक कारसेवक पुल पर नारेबाजी करते रहे। इसी बीच पुलिस की पुल पर खड़ी दो बस बराबरी में आई तो कारसेवको ने उधर दौड़ लगा दी।

और गोलीबारी शुरु, कई कारसेवक घायल...

सरयू पुल पर खड़ी पुलिस की बसो को कारसेवको ने एक कतार में खड़ीकर धक्का देना शुरु किया। पुलिस पीछे हट रही थी। कार सेवक आगे बढ़ रहे थे। इसी बीच एक बस आगे निकल गई और दूसरी बस पीछे रह गई। यहीं पुलिस को मौका मिला और लाठीचार्ज के साथ ही गोलीबारी भी शुरू हो गई। ऐसे में कई कारसेवक पुल से नीचे नदी में जा गिरे तो कुछ कारसेवको को गोली लगी। हमारे साथी अचलपुर के कालुभाई को भी कंधे में गोली लगी। कारसेवक तितर बितर हो गए। पुलिस की गोली से बचने के लिए पुल के दोनो और की चट्टानो के पीछे जा छिपे।

11 बजे फिर आमना-सामना...

11 बजे सुबह तक कारसेवको ने एक बार फिर सामना करने का प्रयास किया। लेकिन, इस बार पुलिस ने रबर की गोलियो का प्रयोग कर कारसेवको को तितर बितर कर दिया। अपरान्ह 3.30 बजे खबर मिली कि विवादित ढांचे पर भगवा ध्वज फहरा दिया गया है। और सभी को अपने-अपने घरो की ओर रवाना होना चाहिए। हम चारो भी एक बार फिर अचलपुर के अपने साथियो से मिले। कालू भाई से उनका हाल जाना और मंदसौर के लिए अलग-अलग साधनो से निकल गए।

हम भी वहां मौजूद थे...

आशुतोष नवाल

रास्ते में मिली बुरी खबर...

अयोध्या से मंदसौर लौटते समय रास्ते में 2 नवंबर को बुरी खबर मिली कि 30 अक्टूबर को ढांचे पर भगवा ध्वज फहराने वाले कोठारी बंधु राम व भरत को मुल्ला मुलायम की पुलिस ने गोली मार दी। जिससे दोनो शहीद हो गए है। यह सुनकर हम लोगो में तेज गुस्से की लहर चली। लेकिन, उस समय मन मसोस कर रह गए। उस गुस्से को 6 दिसंबर 1992 को विवादित ढांचा तोड़कर निकाला।

हम लोगो को कारसेवक पुरम में बनी छोलदारियो में ठहराया गया था। जिसमें चारा बिछाया गया था। उस पर अपने चद्दर बिछाकर कंबल ओढ़ कर सोते थे। रोज सुबह पवित्र सरयू में स्नान कर राम लला के दर्शनो को जाते। वहां बैरिकेट लगाकर यूपी पीएससी के जवान तैनात रहते थे। अयोध्या में धीरे-धीरे कारसेवको की संख्या बढ़ने लगी थी। सुदूर नार्थ ईस्ट से लेकर दक्षिण के केरल और रामेश्वरम तक देश के हर कौने से लोग अयोध्या पहुंच चुके थे। 2 दिसंबर से तो बाहर से लोगो के आने पर ही रोक लगा दी गई थी। लेकिन, तब तक अयोध्या में 5 लाख से ज्यादा कारसेवक पहुंच चुके थे। प्रतिदिन भोजन पांडाल में बढ़िया स्वादिष्ट भोजन का सेवन करते थे। वहां पत्तल दोने की व्यवस्था भी थी। किन्तु, हम लोग अपने साथ थाली, कटोरी, ग्लास भी लेकर गए थे। इसलिए उन्हीं में भोजन करते थे। हम लोग एक-दो दिन छोड़कर सरयू किनारे दाल बाटी भी बना लेते थे। दाल बाटी खाने वालो की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही थी। हमार नित्य क्रम बन गया था कि स्नान करो और राम लला के दर्शन कर भोजन करना। शाम को रामधुन निकालते और जन्म स्थान पहुंचकर दर्शन करते और फिर भोजन पांडाल में पहुंचते। हमारे टेन्ट में कभी कोई तो कभी कोई आरएसएस, विहिप के पदाधिकारी आकर चर्चा करते रहते थे।

अयोध्या पहुंचे हमें 2-3 दिन ही हुए थे कि एक दिन रात्रि विश्राम के पहले आपसी चर्चा में विचार आया कि काशी विश्वनाथ के दर्शन किए जाए। सबने रजामंदी दी तो सुबह 4 बजे उठकर ट्रेन से वाराणसी पहुंच गए। वहां असी घाट पर स्नान कर भगवान काशी विश्वनाथ के दर्शन किए। बाद में अश्वमेघ घाट, मणीकर्णिका आदि घाटो को देखा और नौका विहार किया। बनारस के प्रसिद्ध संकट मोचन हनुमान मंदिर पहुंचकर बालाजी का आशीर्वाद लिया। शाम को 7 बजे पुन ट्रेन में सवार होकर रात्रि 11.30 बजे अयोध्या पहुंचे और दूसरे दिन सुबह से फिर वही क्रम सरयू स्नान, दर्शन आदि का चल निकला।

छह दिसंबर के ऐतिहासिक दिवस के एक दिन पहले 5 दिसंबर को विवादित ढांचे के पीछे गए, वहां सभी साथियो ने फोटो खिंचाए। बाद में दर्शन करने गए तो भारी भीड़ थी। दर्शन का कोई जुगाड़ भी नहीं दिख रहा था। पुलिस अब नए लोगो को लाईन मे भी नहीं लगने दे रही थी। ऐसी स्थिति में मंदसौरी होने का परिचय देते हुए रामजी के जयकारो के साथ ही पुलिस की दादागिरी के खिलाफ नारेबाजी शुरु कर दी गई। जब पुलिस का ज्यादा बल आया तो उनके अधिकारी ने हमसे चर्चा की और मंदसौर के 10-12 कारसेवको के साथ ही अन्य जो लोग दर्शन का इंतजार कर रहे थे, उन्हें भी दर्शन करने के लिए आगे लाईन में लगाया गया।

एक मुट्ठी रेत के आदेश ने किया नर्वस...

पांच दिसंबर की शाम को धर्मसभा में धर्माचार्यो एवं विहिप नेताओ ने सर्वानुमति से निर्णय लिया कि ढांचे को किसी तरह की क्षति नहीं पहुंचाई जाएगी। प्रतिकात्मक कार सेवा करेंगे। सभी कार सेवक सरयू नदी से एक-एक मुट्ठी रेत लाएंगे और ढांचे के समीप डालेंगे। इस निर्णय को सुनकर पांडाल में ही विरोध के स्वर उठने लगे। लेकिन, दूसरे दिन सुबह बड़ी संख्या में लोगो ने सरयू से रेत ली और ढांचे की ओर बढ़े।

और ढह गया बाबरी ढांचा...

छह दिसंबर क सुबह धर्मसभा प्रारंभ हुई। पुलिस व अर्ध सैनिक बलो को किसी भी स्थिति में गोली चालन नहीं करने के निर्देश थे। इधर धर्मसभा में विहिप, आरएसएस, भाजपा के बड़े नेताओ सहित धर्माचार्य भी मंचासीन थे। सुबह 11 बजे के आसपास विवादित ढांचे के पीछे खड़े पुलिस वाहनो में से एक वाहन में साधु सवार हुआ। वाहन को स्टार्ट कर तेजगति से चलाते हुए ढांचे में घुस गया। वाहन में सवार अन्य कार सेवक भी ढांचे में घुसते चले गए। कुछ ही देर में सब्बल, गेती, फावड़े, रस्सी भी पहुंच गई और शाम होते-होते ढांचा इतिहास बन गया। इस दौरान पुलिस या आर्मी नहीं पहुंच सके, इसलिए कारसेवको ने रास्ते में अनेक स्थानो पर पेड़ काट कर डाल दिए थे। यह पेड़ भी दूसरे दिन कारसेवको ने ही हटाए थे।

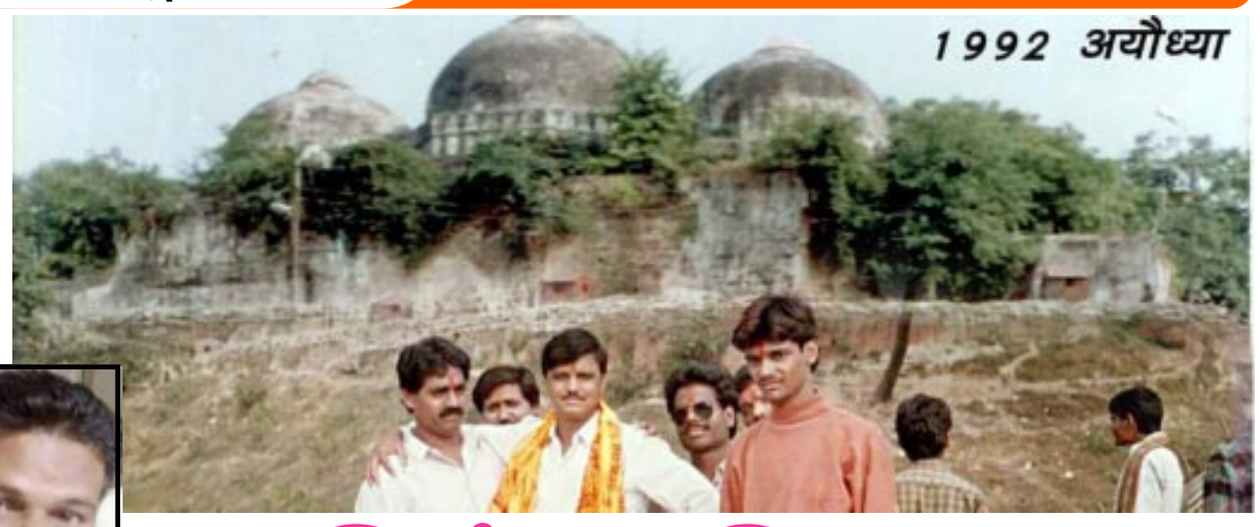

छह दिसंबरः हिन्दू समाज के लिए ऐतिहासिक दिन

मंदसौर, 21 जनवरी गुरु एक्सप्रेस। छह दिसंबर 1992 के ऐतिहासिक दिन सुबह 11 बजे से लेकर अगले दिन दोपहर तक का समय हमारे लिए जन्म जन्मांतर तक याद रखने वाला दिन बन गया। बाबरी ढांचा ढहाने से लेकर रामजी का नया ओटला बनने और राम लला विराजमान होने तक और फिर सुंदर कांड पाठ तक मुझे व मेरी टीम को राम काज करने का जो अवसर मिला, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। एक तरफ मंदसौर में हमारे परिजन चिंतित थे तो दूसरी और हमारी टीम विवादित ढांचे को गिराने और मलबे का साफ कर नया ओटला बनाने में इतने मशगूल हो गए थे कि हमें भोजन की भी याद नहीं आई। वहां जब थोड़ी-थोड़ी देर में चाय आती, उसका सेवन कर ही हजारो कारसेवक रामकाज में जुटे रहे। दरअसर दूसरी कारसेवा 6 दिसंबर 1992 के लिए मंदसौर से एक जत्था 26 नवंबर को निकला था। उस दिन मेरा जन्मदिवस भी था। इसलिए सुवासरा में सभी साथियो ने जन्मदिवस की बधाई दी। सुवासरा से अवध एक्सप्रेस में सवार होकर 27 नवंबर की दोपहर बाद अयोध्या पहुंचे। उस दिन एक मंदिर में हमे रुकवाया गया। दूसरे दिन कारसेवक पुरम में मध्यप्रदेश के पांडाल में बनी छोलदारियो में ठहरे। अविभाजित मंदसौर जिले के नीमच, मनासा, जावद, रामपुरा, जीरन, मल्हारगढ़, पिपलिया मंडी, नारायणगढ़, दलौदा, सीतामऊ, सुवासरा, कयामपुर, नाहरगढ़, शामगढ़, गरोठ, भानपुरा सहित अनेक गांवो से बड़ी संख्या में कारसेवक अयोध्या पहुंचे थे। हमारी टीम में स्व. नपाध्यक्ष श्री प्रहलाद बंधवार, सुनील बंसल, राजेश राठौर, नितिन शिन्दे, धर्मेन्द्र बसेर, रामेश्वर मकवाना, स्व. राहुल अकोलकर, राजेन्द्र सिसौदिया शामगढ़, भरत शिंदे, आशीष बोथरा, स्व. देवेन्द्र शर्मा शामिल थे।

कैमरे तोड़े, रीले निकाल ली...

मेरे जैसे कुछ लोगो को फोटो खिंचने का शौक था। ऐसे लोग छह दिसंबर को भी अपने कैमरे लेकर गए थे, हालाकि, मैं इस अभियान में कैमरा ले ही नहीं गया था। जैसे ही ढांचा टूटा कुछ कार सेवको ने फोटो खींच रहे लोगो को मीडिया पर्सन समझकर उनके कैमरे छीन लिए, रीले निकाल ली। इस दौरान बीबीसी के पत्रकार मार्क टूली भी चपेटे में आ गए थे।

बात करने के लिए मीडिया सेंटर...

उस जमाने में फोन सुविधाएं काफी कम थी। इसलिए अयोध्या में स्थित टेलीकाम सेंटरो अर्थात एसटीडी पीसीओ पर लाईन में लगकर मंदसौर में किसी एक के घर फोन करते थे। जिससे कि वे बाकी लोगो के घर पर भी खबर कर दे। मैने जरुर एक दो बार जुगाड़ लगाकर मीडिया सें टर पहुंचकर वहां से बगैर पैसे में बात की थी। मीडिया सेंटर जन्मभूमि के सामने की तरफ स्थित था।

बाबा मौर्य लाए कपड़ा, ओटला ढका...

ढांचा ढहाने के बाद वहां की सफाई की गई। इस दौरान कार सेवको ने वहां से निकली ईटो को अपने बेग में रख लिया। चांद-तारा मार्के की इन ईटो को मंदसौर के कारसेवको ने अपने सुविधाघरो में रखा था। यहां सबसे पहले उपर चढ़ने के लिए सीढ़िया बनाई जाना थी। करीब 500 मीटर दूर स्थित एक गोदाम से रेत, सीमेंट आदि लाना थी। ऐसे में साथी हाथ बढ़ाना वाली स्टाईल में कार सेवक गोदाम से लेकर रामलला के नए लेकिन, अस्थाई मंदिर तक दोनो तरफ मानव श्रृंखला की तरह खड़े हो गए। शुरुआत में सीमेंट की बजाय नमक की बोरी आ गई। जिसे खोला तो नमक निकला। तत्काल जैसे बोरी आई थी, वैसे ही वापस भेज दी गई। इसके बाद कब रेती, सीमेंट आई, पता ही नहीं चला। पानी का टेंकर आ गया। जिससे टीले को लेबल कर एक जैसा किया। पहले सीढ़िया बनाई और फिर टीले पर ओटला बनाया। चारो तरफ बल्लियां लगाई गई। पर ओटले को केसे ढका जाए। भगवान की प्रतिमा के उपर छत भी चाहिए। यह देख रंगकर्मी, कवि, गीतकार, सिद्धहस्त कलाकार बाबा सत्यनारायण मौर्य अपने कमरे पर गए और वहां पेंटिंग करने के लिए रखा गया पिंक गुलाबी कलर का कपड़ा लाए और अस्थाई मंदिर की छत और आस-पास उसे लगाया गया। बाबा मौर्य काफी समय से अयोध्या में थे और उन्होंने अवधपुरी के सभी मार्गो पर दिवार लेखन कर रामलला के गुणगान किए थे। प्रसिद्ध जयकारा 'राम लला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे' भी उन्होंने ही कारसेवको को दिया था।

सभी को वापसी के निर्देश...

छह दिसंबर की शाम को सभी कारसेवको को अपने-अपने घरो को लौटने के निर्देश दिए गए। हम कुछ कारसेवको को छोड़कर अन्य सभी अपनी छोलदारियो में पहुंचे और सामान लेकर स्टेशन पहुंचने लगे। सरकार ने स्पेशल ट्रेने चलाई थी। जिससे कारसेवक अपने घरो को प्रस्थान करने लगे। हम 8 दिसंबर को जब पूरे देश में कर्फ्यू की स्थिति बनी तो वहां से निकले और 9 दिसंबर को मंदसौर पहुंचे। मंदसौर में भी 8 दिसंबर को कर्फ्यू लगा दिया गया था।

मन को असीम शांति और दिल आनंदित है...

लगभग 33 और 31 साल बाद आज यह दिन आया है। रामलला नवनिर्मित भव्य मंदिर में विराजमान हो रहे है। तो मन को असीम शांति मिल रही है और दिल आंनदित है। यह आनंद ऐसा है, जिसे शब्दो में बयां नहीं किया जा सकता है।

अब 4 फरवरी को जाएंगे अयोध्या...

विश्व हिन्दू परिषद एवं श्री राम जन्मभूमि न्यास द्वारा कारसेवको को अभिनंदन कर अयोध्या दर्शनो के लिए ले जाया जा रहा है। मैं भी खुश किस्मत हूं कि मुझे भी 4 फरवरी को स्पेशल ट्रेन से अयोध्या जाने का अवसर मिल रहा है। हमारी पूरी टीम इस दौरान रामलला के दर्शन कर संपूर्ण आनंद की अनुभूति करेगी।

श्री अयोध्याजी के नवनिर्मित मंदिर में आज

श्री राम लला

के विराजमान होने के अवसर पर
समस्त देशवासियो और विश्व में फैले हिन्दू समाज को
दिल की गहराई से

बहुत-बहुत बधाई, शुभकामनाएं

******* बधाईकर्ता *******

धीरज पाटीदार
प्रदेश मंत्री
भाजपा पिछड़ा मोर्चा मध्यप्रदेश

श्रीमती भारती पाटीदार
सदस्य- जिला योजना समिति मंदसौर
पार्षद- नगर पालिका परिषद मंदसौर

श्री अयोध्याजी के नवनिर्मित मंदिर में आज

श्री राम लला

के विराजमान होने के अवसर पर
समस्त देशवासियो और विश्व में फैले हिन्दू
समाज को दिल की गहराई से

बहुत-बहुत बधाई,
शुभकामनाएं

******* बधाईकर्ता *******

नरेश चंदवानी
भाजपा नेता, मंदसौर

श्रीमती निर्मला नरेश चंदवानी
सभापति लोक निर्माण विभाग, नपा परिषद, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक- आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in